प्रातःक्लास 23/6/68 ओमशांति पिताश्री

ओमशांति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। समझाना उन्हों को होता है जिन्होंने कुछ कम समझा है। समझा तो रहे हैं। कोई बहुत समझदार बनते हैं। बच्चे जानते हैं यह बाबा तो वण्डरफुल है। भल तुम यहां बैठे हो; परंतु अन्दर में समझते हो यह हमारा बेहद का बाबा भी है, बेहद का टीचर भी है, बेहद की शिक्षा देते हैं। सृष्टि चक्र के आदि–मध्य–अंत का राज़ समझाते हैं। स्टूडेण्ट के बुद्धि में तो होना चाहिए ना। फिर हम साथ में भी ज़रूर ले जावेंगे। बाप जानते हैं यह पुरानी छी–छी दुनियां है। इनसे बच्चों को ले जाना है। कहां? घर। जैसे कन्या की शादी होती है तो ससुर घर वाले आते हैं ना कन्या को अपने घर ले जाने। अभी तुम यहां बैठे हो, बाबा समझते हैं बच्चों को अन्दर में ज़रूर आता होगा कि हमारा बेहद का बाबा भी है, बेहद की शिक्षा भी देते हैं। बहुत बड़ी शिक्षा देते हैं। जितना बड़ा बाबा उतनी बड़ी बेहद की शिक्षा भी देते हैं। रचना के आदि–मध्य–अंत का राज़ भी बच्चों की बुद्धि में है। जानते हैं बाप इस छी–2 दुनियां से हम सभी को वापस ले जाते हैं। यह भी अन्दर में याद करने से मनमनाभव ही है। चलते–फिरते उठते–बैठते बुद्धि में यही याद रहे। वण्डरफुल चीज़ को याद करना होता है ना। तुम जानते हो अच्छी रीत पढ़ने से हम फिर से विश्व के मालिक बनते हैं। यह तो ज़रूर बुद्धि में चलना चाहिए। पहले बाप को याद करना पड़े। टीचर बाद में मिलता है। बच्चे जानते हैं हमारा बेहद का रूहानी बाप है। सहज याद दिलाने लिए बाबा युक्तियाँ बताते रहते हैं। मामेकं याद करो। जिस याद से ही आधा कल्प के विकर्म विनाश होंगे। पावन बनने लिए तुमने जन्म–जन्मांतर भक्ति, जप–तप आदि बहुत ही किये हैं। मन्दिरों में जाते हैं, भक्ति करते हैं। समझते हैं हम परम्परा से करते आये हैं। शास्त्र कबसे बनी(ने) हैं? कहेंगे परम्परा से। मनुष्यों को कुछ भी पता नहीं है। सतयुग में तो शास्त्र होते ही नहीं। तुम बच्चों को तो वण्डर खाना चाहिए। बाप बिगर कोई भी यह बातें समझा न सके। यह बाप भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। यह जो हमारा बाप है उनको कोई माँ–बाप नहीं है। कोई कह न सके कि यह शिवबाबा किसका बच्चा है। यह बातें बुद्धि में घड़ी–2 याद रहें तो यही मनमनाभव है। टीचर पढ़ाते हैं; परंतु खुद कहां से पढ़ा नहीं है। वह नॉलेज–फुल है। मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है। चैतन्य है। ज्ञान का सागर है। चैतन्य होने कारण सभी कुछ समझाते हैं। कहते हैं बच्चों में जिस शरीर में प्रवेश किया हुआ हूँ इन द्वारा मैं तुमको आदि से लेकर इस समय तक सभी राज़ समझाता हूँ। अंत के लिए तो फिर पीछे कहेंगे। उस समय तुम भी समझ जावेंगे अभी अंत आता है। कर्मातीत अवस्था को भी नम्बरवार पहुँच जावेंगे। तुम असार भी देखेंगे। पुरानी सृष्टि का विनाश होना ही है। यह अनेक बार देखा है और देखते रहेंगे। पढ़ते ऐसे हैं जैसे कल्प पहले भी पढ़े थे। राज्य लिया, फिर गंवाया फिर अभी ले रहे हैं। बाप फिर से पढ़ा रहे हैं। कितना सहज है। तुम बच्चे समझते हो हम सच्च–2 विश्व के मालिक थे। फिर बाबा आकर हमको वही ज्ञान दे रहे हैं। बाबा राय देते हैं ऐसे–2 अन्दर में चलना चाहिए। बाबा हमारा बाबा भी है टीचर भी है। टीचर को कब भूलेंगे क्या। टीचर द्वारा तो पढ़ाई पढ़ते रहते हैं ना। कोई–2 बच्चों से माया बहुत ही गफ़लत कराती है। एकदम आँखों में जैसे कि घूर डाल देती है। पढ़ाई ही छोड़ देते हैं। माया इतनी गफ़लत में डाल देती है। पढ़ाई ही मुख्य है। सो भी कौन छोड़ते हैं? बाप के बच्चे। तुम बच्चों को अन्दर में ..... कितनी खुशी रहनी चाहिए। बाबा नॉलेज भी हर बात की देते हैं। जो कल्प–2 देते हैं। बाप कहते हैं कम से कम इस रीति भी मुझ बाप को तो याद करो। कल्प पहले भी तुम ही समझते हो और धारण करते हो। उनका बाबा तो कोई है नहीं। वही बेहद का बाप है। वण्डरफुल बात हुई ना। मेरा कोई बाबा है? बताओ। शिवबाबा किसका बच्चा है? बच्चे समझते हैं हम बेहद के बाप के बच्चे बने हैं। यह पढ़ाई भी वण्डरफुल है। जो इस समय के सिवाय कब पढ़ नहीं सकते। और सिर्फ़ तुम ब्राह्मण ही पढ़ते हो। और यह भी जानते हो बाप को याद करते–2 ही हम पावन बनेंगे। नहीं तो फिर सज़ा खानी पड़ेगी। गर्भ जेल में बहुत सज़ा खानी पड़ती

पड़ेंगे। गर्भ जेल में बहुत सज़ा खानी पड़ती है। वहां सभा बैठती है। सभी सा. करते हैं बिगर सा. तो किसको सज़ा दे नहीं सकते हैं। मुँझ पड़ें हमको यह सज़ा क्यों मिलती है। बाप को मालूम रहता है। इसने यह पाप किया है। यह–यह भूल की है। सभी सा. करते हैं। सा. बिगर सज़ा देना कायदे के विरुद्ध है। उस समय ऐसा फील होता है। जैसे कि इतने सभी जन्मों की सज़ा मिलती है। तो जैसे कि सभी जन्मों की इज्ज़त गई। तो बाप कहते हैं मीठे–2 बच्चों पुरुषार्थ अच्छी रीत करना है। भल स्वर्ग़ में तो सभी जावेंगे; परंतु सज़ा खाई तो फिर ऊँच पद पा न सकेंगे। श्रीमत पर पुरुषार्थ करना है। 16 कला सम्पूर्ण बनने लिए याद की मेहनत करनी है। देखना है हम किसको दुःख तो नहीं देते। सुखदाता बाप के हम बच्चे हम बच्चे हैं ना। बहुत गुल–2 बनना है। यह पढ़ाई ही तुम्हारे साथ चलनी है। पढ़ाई से ही मनुष्य बैरिस्टर, इंजीनियर आदि बनते हैं। बाप की यह नॉलेज बिल्कुल ही न्यारी है। और बड़ी सस्ती भी है। और यह है पाण्डव गवर्मेन्ट इनकॉगनिटो। तुम्हारे बिगर दूसरा कोई समझ नहीं सकते। यह पढ़ाई भी वण्डरफुल है। आत्मा ही पढ़ती है। हमारी आत्मा सुनती है। आत्मा ही सुनाती है। बाप बार–2 समझाते हैं पढ़ाई को कब छोड़ना नहीं। माया छुड़ा देती है। बाप कहते हैं ऐसे मत करो। पढ़ाई छोड़ो नहीं। बाबा के पास रिपोर्ट तो आते हैं ना। रजिस्टर से भी मालूम पड़ता है। यह कितना दिन गैर हाज़िर रहा। एवरेज समझ जाते हैं। फलाना 12 मास गैरहाज़िर रहा। 2/3 वर्ष ऐबसेंट रहा। पढ़ाई छोड़ देते तो बाप को भी भूल जाते हैं। वास्तव में यह भूलने की चीज़ तो है नहीं। यह तो वण्डर फुल बाप है। बाप जानते हैं यह ( ब्रह्मा) ही 84 का चक्र खाने वाला है। तत् त्वम। तुम भी इनके साथ रहते हो। समझते भी हैं ऐसे। जैसे कि एक खेल है। खेल की बात किसको भी सुनाने से झट याद रह जाती है। वह कब भूलते नहीं है। यह अपना अनुभव भी सुनाते हैं। छोटेपन में ही वैरागय ख़्यालात रहती थी। कहता था दुनियाँ में तो दुःख है। अभी हमारे पास सिर्फ़ 10 हज़ार हो जावे तो फिर 50 रु. ब्याज मिलेगा। इतना बस है। स्वतंत्र रहेंगे। घर–बार सम्भालना तो मुसीबत है। अच्छा फिर एक बायस्कोप देखा सौभाग्य सुन्दरी का। बस। बस वैराग्य की सभी बातें टूट गई। ख़्याल हुआ शादी करेंगे यह करेंगे। एक ही थप्पड़ लगा माया का काया कला चट कर दी। था तो गांवड़े का छोड़(र)ा। तो अभी बाप कहते हैं– बच्चे अभी यह तो दुनियां ही नर्क है। और फिर उसमें भी यह तो नाटक है वह भी नर्क है। यह देखने से ही सभी वृत्तियाँ खराब हो जाती है। अखबारें पढ़ते हैं उन में अच्छे–2 माईयों के चित्र दिखते हैं तो वृत्ति उस तरफ जाती है। यह बड़ी अच्छी खूबसूरत है। बुद्धि में आया ना। वास्तव में यह ख़्याल भी चलना न चाहिए। बाप कहते हैं– यह तो दुनियां ही ख़त्म हो जानी है; इसलिए अभी तुम और सभी भूल मामेकं याद करो। ऐसे–2 चित्र आदि भी क्यों देखते हो। यह सभी बातें वृत्ति को नीचे ले जाती है। यह जो कुछ देखते हो यह तो सभी कब्रदाख़िल होनी है। जो कुछ आँखों से देखते हो इनको याद न करो। इन सभी से ममत्व मिटा दो। यह सभी शरीर तो छी–छी पुराना है। भल आत्मा शुद्ध बनी है पर शरीर तो छीछी है। इन तरफ क्या ध्यान देना है। एक बाप को ही देखना है। बाप कहते हैं मीठे–2 बच्चों मंज़िल बहुत ऊँची है। विश्व का मालिक बनने लिए कब कोई ट्राय भी न करे। कोई की बुद्धि में भी न आये। माया का प्रभाव भी कोई कम नहीं है। साइंस वालों की कितनी बुद्धि चलती है। तुम्हारा फिर हे सायलेंस। सब चाहते हैं हम मुक्ति पावें। तुम्हारी फिर एम है जीवन मुक्ति की। यह भी बाप ने समझाया है। तुम्हारे सन्यासी गुरु लोग थे; परंतु वह भी नॉलेज दे न सके। विवेक भी कहते हैं वह कोई को समझा न सके। गृहस्थ में रह पवित्र बनना है। राजाई लेना है वह कह न सके। भक्ति में मनुष्य बहुत टाइम वेस्ट करते हैं। तुम भी समझते हो हमने कितनी भूलें की हैं। भूले करते–2 बेसमझ बन पड़े हैं। यह है 100% बेसमझ। यह भी जानते हो यह लास्ट का जन्म 100% बेसमझ का ही है। बिल्कुल ही पत्थर बुद्धि बेसमझ बन पड़े हैं। अन्दर में आता है यह तो बड़ी वण्डरफुल नॉलेज है। जिससे हम क्या से क्या बन जाते हैं। पत्थर बुद्धि से पारस बुद्धि अभी .....

समझते हो। ख़ुशी का पारा भी चढ़ता है। हम सतोप्रधान से तमोप्रधान में कैसे आये फिर सतोप्रधान बनाने लिए बाबा कितनी युक्ति समझाते हैं। भल यहां बैठे हो। सिर्फ़ बुद्धि से बाप को याद करो। बाबा हमारा बेहद का बाबा है उनका कोई बाप नहीं। वह टीचर है उनका कोई टीचर नहीं। कहेंगे तब कहां से सीखा। वण्डर खावेंगे ना। बहुत लोग समझते हैं यह कोई गुरू से सीखा है। अगर गुरु से सीखा तो गुरु के और भी तो शिष्य होंगे। सिर्फ़ एक शिष्य था क्या। गुरुओं के शिष्य तो ढेर होते है। आगा खां के देखो कितने शिष्य हैं। गुरु के लिए कितना अन्दर में रहता है। उनको हीरों में वज़न करते हैं। तुम ऐसे सद्गुरु को किसमें वज़न करावेंगे। वह क्या करता था। कुछ भी नहीं। यह तो बेहद का सुप्रीम गुरु है। उनको (शिवबाबा) को तुम किस में वज़न करेंगे। उनका वज़न कितना है। एक हीरा भी नहीं डाल सको। बिल्कुल ही बिन्दी है। वह गुरुलोग तो बनाते कुछ भी नहीं हैं। और नीचे गिराते रहते हैं। अभी उनको तुम किसमें वज़न करेंगे। वह बाप इतना ऊँच बनाते हैं तुमको। ऐसी–2 बातें तुम बच्चों को विचार करनी है। यह तो बड़ी महीन बात हुई। भल यह तो सभी कहते रहते हैं हे ईश्वर, हे भगवान; परंतु यह थोड़े ही समझते हैं कि वह बाप भी है टीचर भी है गुरु भी है। यह तो साधारण रीति बैठे हैं कि मुखड़ा देख सकें। बच्चों पर प्यार तो रहता है ना। इन मददगार बच्चों बिगर स्थापना थोड़े ही करेंगे। जास्ती मदद देने वाले को ज़रूर जास्ती प्यार करेंगे। कमाने वाला बच्चा अच्छा होगा तो ज़रूर उस पर प्यार भी जावेगा ना। यह बाप भी देखते हैं बच्चा बड़ा मददगार अच्छा है। यह ज़रूर ऊँच पद लेगा। बच्चों को देख–2 हर्षित होते हैं। आत्मा बहुत खुश होती है। कल्प–2 बच्चों को देख खुश होता हूँ कल्प–2 यही बच्चे मददगार बनते हैं। बहुत ही प्यारे लगते हैं। कल्प–कल्पांतर का प्यार जुट जाता है। भल कहां भी बैठे रहो बुद्धि में बाप ही याद रहे। यह बेहद का बाबा है। इनको कोई बाप नहीं। इनको कोई गुरु नहीं। स्वयं ही सब कुछ है। जिसको ही सभी याद करते हैं। सतयुग में तो कोई याद नहीं करेंगे। 21 जन्मों लिए बेर(ड़)ा पार हो जावेगा। तो तुम्हारे में कितनी खुशी होनी चाहिए। बस सारा दिन बाप की ही सर्विस करें। ऐसे बाप का परिचय दें। बाप से यह वर्सा मिलता है। बाबा हमको राजयोग सिखलाते हैं। और फिर सभी को साथ भी ले जाते हैं। सारा चक्र भी बुद्धि में है। ऐसा चक्र तो कोई बना न सके। अर्थ का ही किसको पता नहीं। तुम अभी समझते हो हमारा बेहद का बाबा भी है –बेहद का टीचर भी है, बेहद का सदगुरु भी है। बेहद का राज्य देते हैं। फिर साथ ले जावेंगे। ऐसे–2 तुम समझावेंगे तो फिर कोई सर्वव्यापी कह सकेंगे? वह बाप है टीचर है तो सर्वव्यापी कैसे हो सकता। ऐसे बाप टीचर–गुरु को तुम कुत्ते–बिल्ले, ठिक्कर–भित्तर मे कह देते हो। तुम्हारी आत्मा की बुद्धि क्या हो पड़ी है। भल कोई भी हो। इसमें कब इनसल्ट नहीं समझेंगे। कुछ भी कहेंगे नहीं। तुमको तो यह बेहद का बाप समझाते हैं और कोई बता न सके। बेहद का बाप ही नॉलेजफुल है। सारी सृष्टि के आदि–मध्य–अंत को जानते हैं। साथ ले जाने वाला भी है। उनको फिर सर्वव्यापी कुत्ते–बिल्ले में यह गालियां देते हो; इसलिए बाप कहते हैं विनाश काले विपरीत बुद्धि। जो गालियां देते हैं वह विनश्यन्ति ख़त्म हो जावेंगे। विजय तो हम बच्चे ही प्राप्त करेंगे। ऐसे बाप के लिए तुम कहते हो ठिक्कर–भित्तर में है। अपनी अ(इ)नसल्ट, बाप की इनसल्ट, सारी दुनियां की इनसल्ट करते हो। बाप बच्चों को समझाते हैं पढ़ाई को भूलो मत। यह बहुत बड़ी पढ़ाई है। बाबा परमपिता है, परम शिक्षक है, परम गुरु भी है। इन सभी गुरुओं को भी ले जावेंगे। ऐसी–2 वण्डरफुल बातें सुनानी चाहिए। बोलो यह बेहद का खेल बना हुआ है। हरेक एक्टर को अपना पार्ट मिला हुआ है। बेहद के बाप से बेहद की बादशाही लेते हैं। हम ही मालिक थे। वैकुण्ठ होकर गया है फिर ज़रूर होगा। कृष्ण नई दुनियां का मालिक था। अभी पुरानी दुनियां है। फिर नई ज़रूर बनेगा। चित्र में भी क्लीयर है। तुम समझते हो अभी हमारी लात नर्क तरफ मुँह स्वर्ग़ तरफ है। वही याद रहती है। ऐसे याद करते–2 अंत मते सो गति हो जावेगी। कितनी अच्छी–2 बातें हैं। उनका सिमरण करना चाहिए। अच्छा बच्चों को गुडमॉर्निंग और नमस्ते।